OM 18_Page 1 and 2 01-12-2014 20:05 Page 9

मेरठ। ममता शर्मा,आर.टी.ओ. के साथ ज्ञान चर्चा करने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.श्वेता तथा ब्र.कु.हेमा।

कामठी-विना। ओम शान्ति पीस पार्क का फीता काटकर उद्घाटन करते हुए विधायक सुनील केदार, ब्र.कु.प्रेमलता, ब्र.कु.भाऊ राव बंडू, महाजन वामन भडंग तथा अन्य।

जम्मू-कश्मीर। डिवीज़नल कमिश्नर,आई.ए.एस. शान्तमणु को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. सुदर्शन।

मऊ। जिला अधिकारी चंद्रकांत पाण्डे तथा पुलिस अधीक्षक अशोक कुमार को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.विमला।

केशोद-गुज.। वासावाडी पे सेंटर स्कूल में 'सात अरब सत्कर्मों की महायोजना' कार्यक्रम में सत्कर्मों के विषय पर समझाते हुए ब्र.कु. अल्पा। साथ हैं प्रिंसीपल कानाबार साहेब तथा अन्य।

मालिया हाटीना-गुज.। आई.टी.आई. कॉलेज में 'सात अरब सत्कर्मों की महायोजना' कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में राठोड़ साहब, ब्र.कु.मीता तथा स्टाफ।

सातो गुणों से हम कुछ भी बदल सकते हैं...

गीता ज्ञान का आध्यात्मिक रहस्य

-राजयोग शिक्षिका ब्र.कु.उषा

राजयोग के माध्यम से गीता ज्ञान के वास्तविक स्वरूप से हम अपनी वास्तविकता की ओर वापस आते हैं। स्वधर्म के आधार पर जीवन जीयेंगे तो हर संघर्ष में विजय निश्चित है। कई बार लोग सवाल पूछते हैं कि क्या आज की वास्तविक दुनिया में स्वधर्म के आधार पर जीवन जीयेंगे तो हम सफल हो सकते हैं? क्या ये प्रैक्टिकल है? अगर हम शांति की बातें करेंगे, प्रेम की बातें करेंगे, आनंद की बातें करेंगे तो क्या आज के युग में जीवन जीना संभव है, लाभप्रद है? बहुत बड़ा फायदा है। आज दुनिया में जितनी भी महान हस्तियां समय प्रति समय होकर गई हैं, उनके जीवन की विलक्षणता में ऐसी कौन सी बात थी जिससे वे महानता के शिखर पर पहुँचे। अगर उनकी महानता को देखें तो उन्होंने संसार में कितना बड़ा परिवर्तन करके दिखाया, कितने लोगों के लिए वे प्रेरणास्रोत बन गए, कौन-सी बात उनके अंदर थी? उन्होंने इन्हीं सात गुणों की आभा को अपने जीवन में विकसित किया था, यही सात गुणों का प्रभाव उनके जीवन में था। चाहे वे स्वामी विवेकानंद हों, महात्मा बुद्ध हों, महावीर स्वामी हों, मदर टेरेसा हों, आदरणीया दादी प्रकाशमणि जी को भी हमने इन प्रत्यक्ष आँखों से उनके जीवन चरित्र को देखा तो उनके अंदर ऐसी कौन सी बात थी जिसने लोगों को प्रभावित किया? उनके अंदर आध्यात्मिक ज्ञान था, पवित्रता की शक्ति थी, प्रेम था, शांति थी, सुख था और आनंद था। **इससे जीवन के अंदर तीन बड़े फायदे होते हैं। पहला फायदा ये होता है कि हम परिस्थिति को बदल सकते हैं, परिवर्तन कर सकते हैं और परिस्थिति को अपने अनुकूल बना सकते हैं। दूसरा फायदा यह होता है कि हम लोगों की मनोवृत्ति को बदल सकते हैं और तीसरा फायदा यह होता है कि हम वातावरण को परिवर्तित कर अपने अनुकूल बना सकते हैं।** स्वामी विवेकानंद के जीवन की बात है जब वो धर्म सम्मेलन में अमेरिका गये थे तो वहाँ गीता शास्त्र को अपमानित करने के उद्देश्य से उसे सभी शास्त्रों के नीचे रखा गया और सबसे ऊपर बाईबल को रखा और भरी सभा में हंसी उड़ायी गयी कि आपकी गीता तो आऊट डेटेड हो गई। हमारी बाईबल अभी टॉप पर है। आज की दुनिया का कोई डिस्चार्ज बैट्री वाला इंसान वहाँ होता तो वह क्या करता? वह हंगामा करता, लड़ाई-झगड़ा आरंभ कर देता, खून-खराबा आरंभ हो जाता और शायद विश्वयुद्ध, धर्मयुद्ध आरंभ हो जाता। परंतु स्वामी विवेकानंद डिस्चार्ज बैट्री वाले नहीं थे। वे मुस्कुराए और उन्होंने कहा कि आपने जो गीता का सम्मान किया, उसका मैं धन्यवाद कैसे करूं? लोग हंसने लगे कि इस व्यक्ति को ये भी नहीं पता है कि हमने सम्मान किया या अपमान किया। स्वामी विवेकानंद आगे बढ़े और नीचे से गीता को खींचा और जैसे ही गीता को उन्होंने खींचा तो सारे शास्त्र गिर गए। उन्होंने कहा कि आपने तो गीता को आधार बना दिया। आज अगर संसार में गीता न हो तो दुनिया का कोई धर्म, कोई शास्त्र टिक नहीं सकता, फिर सारी परिस्थितियां बदल गयी, लोग उनके पीछे-पीछे चल पड़े। चार्ज बैट्री और डिस्चार्ज बैट्री का यही सबसे बड़ा अंतर है। डिस्चार्ज बैट्री वाला व्यक्ति हंगामा करता है और चार्ज बैट्री वाला अपने विवेक से कार्य करता है और परिस्थिति को अपने अनुकूल बना लेता है। वे परिस्थिति के अधीन नहीं होते हैं बल्कि परिस्थिति के ऊपर अपना अधिकार बना लेते हैं।

आज संसार में इस बात की आवश्यकता है कि हम संसार की परिस्थितियों के अधीन न हो जायें लेकिन अपनी बैट्री को इतना चार्ज कर लें कि उस परिस्थिति को अपने वश में कर लें यही आध्यात्मिक शक्ति है। वहाँ बैठे हुए सभी लोगों की मनोवृत्ति बदल गयी। लोग उनके पीछे-पीछे चलने लग पड़ें। शिकागो वर्ल्ड ऑफ पार्लियामेंट में भारत को एक ऐसा स्थान दे दिया गया, जो आज भी स्थापित है, नहीं तो ये स्थान मिलना मुश्किल हो जाता। उस समय भारत के प्रति भावनायें व वातावरण बदल गया।

भाव यह है कि हमें उपरोक्त महान आत्माओं की भांति अपने सातो गुणों का चिंतन कर उन्हीं के विकास में लग जाना चाहिए। वे हमें किसी भी क्षेत्र में सफल होने में अति मददगार साबित होते हैं।

थल सेना में उच्च पद पर आसीन कर्नल कर्मजीत चुग एक अद्भुत व्यक्तित्व हैं। देश सेवा करने के पश्चात् आपने आर्मी की नौकरी छोड़ समाज सेवा के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दिखाई तथा उसके लिए एक कैंसर से सम्बन्धित स्वयं सेवी संगठन के साथ नाता जोड़ा। बहुत से जन जागृति कार्यक्रम करने के पश्चात् आपका रुझान कुछ नया करने का था। इसके लिए आपने राजयोग का अभ्यास किया, तत्पश्चात् आपके जीवन में एक नवीन ऊर्जा का संचार हुआ। वर्तमान समय आपने ब्रह्माकुमारीज़ से सम्बन्धित मूल्य शिक्षा में एम.एस.सी. की डिग्री प्राप्त की है। आपसे अपनी सुनहरी यादों से सम्बन्धित बातचीत के कुछ अंश यहाँ प्रस्तुत हैं।

राजयोग ने दिशा बदली

प्रश्न: आप इस संस्था से कब से जुड़े हैं और इससे पहले आप क्या करते थे?

उत्तर: इससे पहले मैं एन.जी.ओ. (ग्लोबल कैंसर कनसर्न इंडिया), में था। मैं स्कूलों में बच्चों के लिए अवेयरनेस प्रोग्राम करता था। मैंने इंदौर के आसपास डेढ़ सौ के करीब स्कूल को कवर किया और वहाँ से बहुत अच्छा रेस्पॉन्स मिला। इसमें सबसे अच्छी बात ये रही कि बच्चे मुझे पहचानने लगे।

प्रश्न: आप ब्रह्माकुमारी संस्थान के निकट पहली बार कब आये और इससे कैसे जुड़ाव हुआ?

उत्तर: मैं एक एकाउंट मैनेजर के घर गया। उनसे बातचीत में मुझे पता चला कि वो ब्रह्माकुमारी संस्था से जुड़े हुए हैं। उन्होंने मुझे आश्रम आने की प्रेरणा दी। मैं शाम को गया उनका प्रोग्राम देखा तो मुझे बहुत अच्छा लगा और अगले ही दिन दीदी ने मुझे कोर्स कराना शुरु कर दिया उसके बाद से ही मैं जुड़ा हुआ हूँ। मेरी पत्नी बच्चे सभी बाबा को याद करते हैं।

प्रश्न: हमें अपनी गलतियों और कमी-कमज़ोरियों को दूर करना थोड़ा मुश्किल लगता है तो आपको राजयोग मेडिटेशन से अपनी कमियों को छोड़ने की प्रेरणा और आत्मबल कैसे मिला?

उत्तर: मैं अपने पाँचों विकारों पर गौर करता था और पहले मुझे क्रोध बहुत आता था लेकिन अब मैंने क्रोध करना बहुत कम कर दिया है। अब जब लोग मिलते हैं और कोई गलती करते हैं तो मुझे ये ख्याल आता है कि इनको भी जैसे वे हैं वैसे ही स्वीकार कर लेना चाहिए। मैं पहले शराब पीता था। राजयोग सीखने के बाद मैंने बंद कर दिया।

प्रश्न: जब आप बाबा से पहली बार मिले तो आपका क्या अनुभव रहा?

उत्तर: मैं तो उस वक्त स्वर्ग में था और मुझे अमृतवेले बहुत आनंद आता था। आज भी जब मैं बाबा के सामने बैठता हूँ तो वो समय याद आ जाता है। मैं अंदर से शांत हूँ कोई दु:ख नहीं है और डिटैचमेंट भी शुरु हो गया है।

प्रश्न: यहाँ के मेडिटेशन और दूसरे जगहों पर जो मेडिटेशन सिखाते हैं उसमें क्या अंतर है?

उत्तर: दूसरे जगहों पर जो मेडिटेशन सिखाते हैं वो ज्यादातर एक्सरसाइज़ होती है, एक ड्रिल पूरी करने के बाद दूसरी करते हैं। परन्तु यहाँ पर हम मन से बातें करते हैं और विचारों को सही दिशा देते हैं। जो आजतक मैंने अनुभव किया है कि मैं अभी अपने विचारों को समझकर उन्हें सही दिशा प्रदान कर पाता हूँ।

- शेष पेज 11 पर...